2 अगस्त 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 6
अगस्त (प्रथम), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

महाविद्यालयों में शिरोधार्य श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय अपने गौरवमयी इतिहास तथा अपने उद्देश्यों की अडिगता के साथ 45वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इसी उपलक्ष्य में दिनांक 24 जुलाई 2021 को महाविद्यालय के 45वें स्थापना दिवस के अवसर पर महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में एक समारोह का आयोजन किया गया।

जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री वसंतभाईजी दोषी, श्री महिपालजी ज्ञायक, श्री अनंतजी पाटनी, श्री नरेशजी लुहाड़िया, श्री विपुलजी मोटानी, श्री अशोकजी पाटनी, आ. कमलाजी भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का विशेष समागम प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन पं. जिनकुमारजी शास्त्री तथा मंगलाचरण दिव्यांश जैन ने किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने महाविद्यालय की स्थापना के पीछे निहित उद्देश्यों को बताते हुए महाविद्यालय की सफलता का परिचय दिया।

इसके तत्पश्चात् पं. अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली ने अपने अध्ययन काल की मधुर स्मृतियों को तरोताजा किया। साथ ही दोनों दादा के प्रति अपनी कृतज्ञता भी ज्ञापित की। पं. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने महाविद्यालय के अविस्मरणीय सफर से सभी को परिचित कराया। उन्होंने कहा कि कल्पना करो यदि महाविद्यालय न होता तो क्या होता? यहाँ से निकले विद्यार्थियों के अभाव की कल्पना करते हुए

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

।। मंगल आमंत्रण ।। ।। अपूर्व अवसर ।।
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा

४४ वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर

दिनांक 8 से 15 अगस्त, 2021 तक

इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल आदि देश के मूधर्न्य एवं विषय विशेषज्ञ विद्वानों के द्वारा प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से तत्त्वचर्चा का लाभ प्राप्त होगा।

आयोजित शिविर की विशेषताएँ:

शिविर नये रूप में आयोजित होगा। वक्ता और श्रोताओं के लिए एक World-Class Virtual Experience, Immersive Studio का Set-Up स्मारक भवन में ही किया जा रहा है।

सबसे पहले रजिस्ट्रेशन करें और www.PTST.LIVE पर अपने Personalised Dashboard के माध्यम से शिविर सम्बंधित सभी जानकारी प्राप्त करें।

Enrolled Classes Section में आप अपनी चुनी हुई कक्षाओं में सीधे Zoom -app पर जुड़ पाएँगें।

Social Media Section में जाकर शिविर के प्रचार हेतु आकर्षक Facebook Frame को अपनी Facebook profile में लगाना ना भूले। टोडरमल स्मारक के सोशल मीडिया हैंडल्स से भी आप यही से जुड़ पाएंगे।

किसी भी तरह की सहायता के लिए आप अपने Dashboard से शिविर की Support Team को सीधा Whats-app पर सम्पर्क कर सकते हैं। **आइये समय के साथ बदलकर तत्व प्रचार को नया आयाम देकर आगे बढ़ायें।**

https://ptst.live/register

(19) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

तृतीय अध्याय का सार (संसार दु:ख तथा मोक्षसुख का निरूपण)
(गतांक से आगे...)

चार प्रकार की इच्छायें....

सर्व दु:ख का मूल कारण इच्छायें हैं और वे चार प्रकार की हैं – **पहली** विषयग्रहण की इच्छा। यहाँ सबकुछ ग्रहण करना चाहता है और ग्रहण न होने पर दु:खी होता है। **दूसरी** कषायभावों के अनुसार कार्य करने की इच्छा। यहाँ मान के उदय में अपनी प्रसिद्धि चाहता है और क्रोध के उदय में लोगों को डरा-धमका कर अपने अनुकूल करना चाहता है। और यदि ऐसा ना हो तो दु:खी होता है। तथा **तीसरी** पाप के उदय की इच्छा है। इसमें पाप के उदय से जो अनिष्ट कारण मिलते हैं, उन्हें दूर करने की इच्छा से दु:खी होता है।

पंडित जी कहते हैं कि इन तीन प्रकार की इच्छाओं को तो सर्व जगत के जीव दु:ख ही मानते हैं; परन्तु जो **चौथी** पुण्य के उदय की इच्छा है, उसमें जगत के जीवों को सुख लगता है। यहाँ पुण्य के उदय से अपने कार्य पूरे करना चाहता है; परन्तु सभी कार्य पूरे नहीं होते। किसी-किसी के कुछ कार्य, कुछ समय के लिए, किसी काल में पूरे होते हैं। वह भी जब तक पूरे ना हो तब तक दु:खी होता है। कुछ उपाय नहीं है। पुण्य का उदय बाज़ार में तो मिलता नहीं है, पुण्य का उदय तो तब आयेगा, जब पुण्य का बंध किया हो। पुण्य का बंध तो धर्मानुराग से होता है और धर्मानुराग में यह जीव लगता नहीं है। इसलिए दु:खी ही है।

पंडित जी कहते हैं कि **सुखी-दु:खी होना तो इच्छा के अनुसार है, बाह्य कारणों के अनुसार नहीं** अत: संसार में भी जीवों को सुखी कहते हैं, इच्छा के अनुसार ही कहते हैं। 'तीव्र कषाय से जिसके इच्छा बहुत है, उसे दु:खी कहते हैं। मंद कषाय से जिसके इच्छा थोड़ी है, उसे सुखी कहते हैं। परमार्थ से तो दु:ख ही बहुत या थोड़ा है, सुख तो है ही नहीं।' मात्र दु:ख की कमी को ही सुख मानता है। जैसे किसी 104 डिग्री बुखार वाले व्यक्ति का बुखार 100 डिग्री रह जाए, तो पूछा जाने पर वह स्वयं को ठीक हुआ बतलाता है; परन्तु वास्तव में तो वह ठीक हुआ नहीं है।

इसप्रकार संसार अवस्था में इच्छाओं के कारण होने वाले दु:खों का वर्णन किया।

अब जिन जीवों को यह सभी दु:ख भासित होते हैं और जो जीव दु:ख दूर करना चाहते हैं, उन जीवों को मोक्षसुख और उसकी प्राप्ति का उपाय बतलाते हैं।

मोक्षसुख और उसकी प्राप्ति का उपाय....

पूर्व में आठों कर्मों के उदय से होने वाले दु:खों का वर्णन किया था। वे सभी कर्म मोक्ष में नहीं होते हैं। अत: तत्संबंधी दु:ख भी वहाँ नहीं पाया जाता। इसप्रकार पंडितजी ने मोक्ष अवस्था में सुख को सिद्ध किया है।

यहाँ ज्ञानावरण-दर्शनावरण के उदय में विषयों को जानने-देखने कि इच्छा से महाव्याकुल होता था। वहाँ मोह के अभाव में जानने की इच्छा रही नहीं और ज्ञानावरण-दर्शनावरण के अभाव में त्रिकालवर्ती ३ लोक के सर्व गुण पर्यायों को स्पष्ट जानते देखते हैं।

सकल द्रव्य के गुण अनन्त परजाय अनन्ता।
जानैं एकै काल, प्रकट केवलि भगवंता।।

यहाँ एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि मोक्ष में शरीर के बिना विषयों का ग्रहण एवं सुखी कैसे होगा?

समाधान :– जब इन्द्रिय ज्ञान था तब इन्द्रियों से प्रवृत्ति करता था अब अतीन्द्रियज्ञान हो गया अत: बिना इन्द्रियों के ही विषयों का ग्रहण एवं सुखी होता है।

यहाँ कोई कहे कि मन के द्वारा जैसा जानना होता है वैसा जानना होता होगा?

उससे कहते हैं – मन के द्वारा तो स्मरण आदि होने पर अस्पष्ट जानना होता है। केवलज्ञान होने पर तो लोकालोक हाथ पर रखे आँवले के समान स्पष्ट जानने में आता है।

वहाँ मिथ्यात्वजन्य दु:ख रहा नहीं, चारित्रमोहनीय के अभाव होने से कषाय भी नहीं रही। संसार से कोई प्रयोजन रहा नहीं अत: हास्य, रति, अरति आदि भी नहीं है। अन्तराय कर्म का अभाव होने से शक्तियों का घात भी नहीं होता है।

यहाँ कोई कहे कि दान, लाभ, भोग, उपभोग तो करते नहीं हैं। उसे कहते हैं – जैसे कोई गमन करना चाहे, परन्तु किसी ने उसे रोक रखा हो, तो बंधन है। लेकिन जब वह बंधन छूट जाये और गमन करने का प्रयोजन भी ना रहे, तो गमन नहीं करता। वहाँ उसके गमन ना करने पर भी शक्ति प्रकट कही जाती है; उसी प्रकार यहाँ भी जानना।

तथा अघातियाँ कर्मों के अभाव होने से शरीर, आयु आदि भी नहीं रहे हैं; अत: तत्संबंधी रोग आदि दु:ख कैसे होंगे? तथा किसी भी प्रकार के संयोग भी नहीं हैं, इसलीए संयोगों से होने वाले दु:ख भी वहाँ नहीं हो सकता।

इसप्रकार यह सिद्ध हुआ कि सर्वकर्मों का अभाव होने से सिद्ध दशा में सर्वसुख प्रकट होता है।

तथा दु:ख का लक्षण तो एकमात्र आकुलता है और आकुलता भी तभी तक होती है, जब तक इच्छाएँ हो, चूंकि अरहन्त और सिद्ध भगवान के सर्वइच्छाएँ नष्ट हो गयी हैं, इसलिए सर्वदु:ख भी नष्ट हो गया है।

अब यहाँ मूल प्रश्न यह उपस्थित होता है कि मोक्ष तो पंचम काल में होता नहीं तो हम करें क्या? उसे कहते हैं, सुन भाई ! सम्यकदर्शन आदि के साधन से सिद्धदशा कि प्राप्ति होती है, दु:ख भी नष्ट होता है। इसलिए सम्यकदर्शन आदि प्रकट करने का उपाय करो। यह कार्य इस पंचम काल में हो सकता है।

अब अधिकार का समापन करते हुए पंडितजी उपदेश देते हैं कि हे भव्य! हे भाई!! तुझे जो संसार के दु:ख बतलाए सो वह तुझ पर बीतते हैं या नहीं? यह विचार ! और तू जो उपाय करता है उन्हें झूठा बतलाया सो ऐसा ही है या नहीं? यह विचार ! और सिद्धपद प्राप्त होने पर सुख होता है या नहीं? उसका भी विचार कर!!

देखों यहाँ पर तीन बार विचार शब्द का प्रयोग करके विचार की महिमा बतलाते हैं। और कहते हैं कि हमने दु:खों का जैसा वर्णन किया वैसा ही तुझे अनुभव होता हो तो इस संसार से छुटकर सिद्धपद प्राप्त करने का हम जो उपाय कहेंगे, वह अवश्य करना। विलम्ब मत करना। इस उपाय से शीघ्र ही हमारा भला होगा।

इस प्रकार पंडितजी ने इस तीसरे अधिकार में संसार में दु:ख और मोक्ष में सुख के अस्तित्व को सिद्ध किया। ❋

अष्टाह्निका महापर्व सानंद सम्पन्न

१. देवलाली : श्री समयसार कहान शताब्दी महोत्सव वर्ष के अंतर्गत पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई तथा श्री कुन्द–कुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विलेपार्ले, मुम्बई के तत्त्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दि. 16 से 23 जुलाई 2021 तक डॉ. हुकमचंदजी भरिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यान माला सानन्द सम्पन्न हुई।

जिसके अंतर्गत विधान आमंत्रणकर्ता श्रीमती रुक्मणिबेन कल्याणजीभाई शाह, गंगर परिवार द्वारा विधान के प्रथम दिन प्रात:काल मंगल कलश व जिनवाणी विराजमान हुई। तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन उपरांत भव्य उद्घाटन सभा में श्री उल्लासभाई जोबालिया ने विधान कर्ता परिवार एवं सभी विद्वानों का स्वागत किया। इस अवसर पर पं. अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली के व्याख्यान का लाभ मिला।

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् मुम्बई के स्थानीय विद्वानों द्वारा व्याख्यानमाला आयोजित हुई। जिसमें पं. निखिलजी शास्त्री, पं. अभिषेकजी शास्त्री, पं. जितेन्द्रजी शास्त्री, पं. अनिलजी, पं. विवेकजी शास्त्री, पं. मंथनजी शास्त्री, पं. राहुलजी शास्त्री एवं पं. विरागजी शास्त्री के व्याख्यान हुए। साथ ही प्रतिदिन पं. नीलेशभाई शाह का प्रकृति से भेद–विज्ञान विषय पर विशेष व्याख्यान हुये। सम्पूर्ण विधि–विधान का कार्यक्रम पं. अभयकुमारजी शास्त्री, पं. समकितजी शास्त्री व पं. उर्विषजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन पं. विरागजी शास्त्री ने तथा संयोजन श्री वीनूभाई शाह व श्री उल्लासभाई जोबालिया ने किया। 23 जुलाई को रात्रि में भव्य समापन समारोह हुआ। जिसमें वसन्तभाई दोशी, श्री विपुलभाई मोटाणी, मुम्बई उपस्थित रहे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम जिनदेशना एवं पी.के.एस.टी. देवलाली के यूट्यूब चैनल से प्रसारित किया गया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम को तकनीकी माध्यम से प्रसारित करने के लिए अनुजजी, छिंदवाड़ा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

२. चैतन्यधाम (अहमदाबाद) : संयम की साधना, सिद्धों की आराधना एवं निजात्मा की प्रभावना का शाश्वत पर्व अष्टाह्निका दिनांक 17 जुलाई से 23 जुलाई 2021 तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यहाँ प्रात:काल प्रक्षाल, पूजन व श्री नंदीश्वर विधान का आयोजन हुआ। प्रतिदिन पूज्य गुरूदेव श्री कानजी स्वामी के

सी.डी. प्रवचन तथा पं. श्री शैलेशभाई शाह, तलोद के नियमसार ग्रंथ पर प्रवचन हुए साथ ही विदुषी जीनलबेन देवलाली द्वारा तीनों समय स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ।

रात्रि में श्री जिनेन्द्र भक्ति, वैराग्य पाठ एवं क्षमापना पाठ तथा प्रवचनों की शृंखला द्वारा सम्पूर्ण अष्टाह्निका महापर्व में लगभग 50,000 साधर्मिजनों ने इस कार्यक्रम का zoom व YouTube के माध्यम से लाभ प्राप्त किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं विधि–विधान पं. सचिनजी शास्त्री एवं पं. मनीषजी शास्त्री, चैतन्यधाम द्वारा किया गया। इस अवसर पर चैतन्यधाम के प्रमुख श्री अमृतलाल चुन्नीलालजी मेहता, उपप्रमुख श्री अनिलभाई ताराचंदजी गांधी, मंत्री श्री राजुभाई वाडीलालजी शाह एवं प्रतीकभाई चंद्रकांतजी शाह ने सभी साधर्मिजनों का आभार व्यक्त किया।

३. टीकमगढ़ : आषाढ़ मास की अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री सीमंधर जिनालय ज्ञान मंदिर जी टीकमगढ़ में मंगलमय नव लब्धि विधान का आयोजन किया गया।

विधान का शुभारंभ पं. राजेन्द्रकुमारजी चंदावली के निर्देशन में पं. मयंकजी ठगन शास्त्री व मंगलार्थी सर्वार्थ जैन के सहयोग से प्रातःकाल में सम्पन्न हुआ, जिसमें प्रत्येक दिन समाज के दो भिन्न–भिन्न परिवारों को विधान आयोजनकर्ता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

विधान के पश्चात प्रातःकालीन स्वाध्याय में स्थानीय विदुषी बा.ब्र.मीना दीदी का सानिध्य प्राप्त हुआ जिसमें नव लब्धियों के स्वरूप के ऊपर चर्चा का साधर्मियों ने लाभ लिया।

सायंकालीन सभा में मंगल पाठ और भक्ति के उपरांत नगर के स्थानीय शास्त्री विद्वानों सर्वश्री अरविंदजी, विकासजी बानपुर, राजेशजी, आशीषजी, कमलेशजी शास्त्री, मंगलार्थी सर्वार्थ जैन द्वारा श्री रत्नकरंड श्रावकाचार के आधार पर सम्यक रत्नत्रय व श्रावकाचार विषयों पर जिन ध्वनि श्रवण करने को मिली।

कार्यक्रम के अंतिम दिन समाज की आत्मार्थी, शाश्वत, प्रतिभा व ब्राह्मी कन्याओं द्वारा एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें उन्होंने वीर देशना मंगलकारी..विषय पर अपने विचार रखे। पश्चात उनका सम्मान ट्रस्ट के अध्यक्ष व मुख्य अतिथि के द्वारा तात्त्विक–पंक्तियाँ भेंट कर के किया गया।

कार्यक्रम का सफल संयोजन श्री आशीषजी शास्त्री व संजयजी हल्ले के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ।

४. सोनागिर : परमागम मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में कुन्दकुन्द नगर में अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें पं. सुरेशकुमारजी शास्त्री, गुना एवं ब्र. चंद्रेशजी जैन, शिवपुरी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन प्रातः ध्यान केंद्र में प्रार्थना, जिनेंद्र अभिषेक, पूजन एवं विधान का आयोजन हुआ। तदुपरांत पं. श्री सुरेशकुमारजी शास्त्री, गुना द्वारा विधान की जयमाला विषय पर प्रवचन का लाभ मिला।

दोपहर में पूज्य कानजी स्वामी के द्वारा सी.डी. प्रवचन एवं ब्र. चंद्रेशजी, शिवपुरी के वैराग्यमयी प्रवचन का लाभ मिला।

सांयकाल जिनेंद्र भक्ति के पश्चात् प्रथम प्रवचन पं. सुरेशजी शास्त्री, गुना एवं द्वितीय प्रवचन विदुषी अनुभूतिजी शास्त्री, लूणदा द्वारा हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम पं. जीवेशजी शास्त्री, पं. केशरीमलजी पाटनी, श्री वसंतजी एवं गन्धर्व कैलाशजी के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

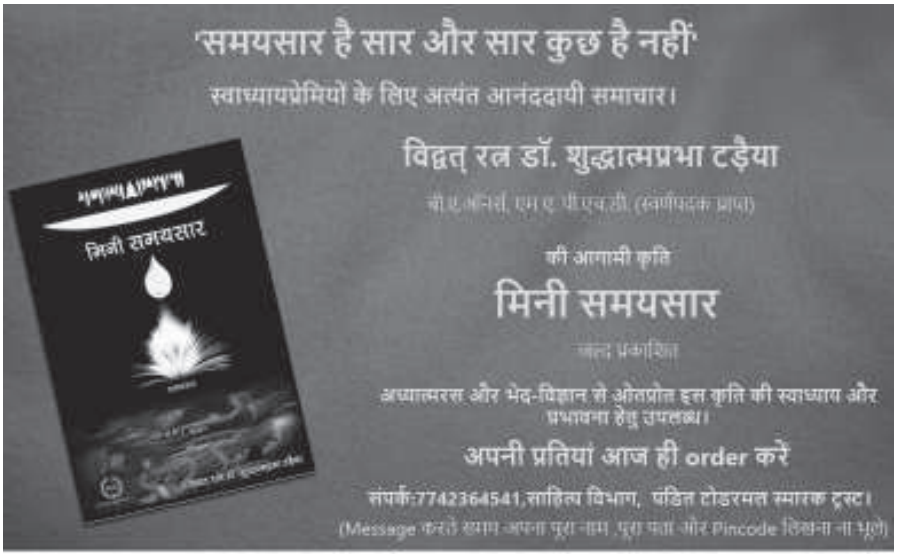

धर्म से भय कैसा? धर्मभीरूता ही तो व्यक्ति को धर्मान्ध बनाती है। अतः कोई कुछ भी क्यों न कहे एक बार तो शान्ति से ऊहापोह करके धर्म एवं पुण्य–पाप की तह तक पहुँचना ही होगा। धर्म के तलस्पर्शी ज्ञान बिना ऊपर–ऊपर से धर्मात्मा बने रहना अपने को अन्धकार में रखना है।

–अध्यात्म रत्नाकर पं. रतनचंदजी भारिल्ल

वीरशासन जयंती विशेष कार्यक्रम

१. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर में वीशासन जयंती के उपलक्ष्य में दि. 25 जुलाई 2021 को **वीरशासन के पल्लवन में श्रमण एवं विद्वानों की भूमिका** इस विषय पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें वीरशासन के उद्धार में श्रमणों एवं विद्वानों के अपूर्व योगदान का 10 वक्ताओं के माध्यम से स्मरण किया गया।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. नीरजजी शास्त्री, खड़ैरी ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से आर्जव गोधा, जयपुर ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से सर्वज्ञ जैन, बर्गी ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पं. संजयजी सेठी, जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से वृषभ वानरे, परभणी ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से पारस जैन, भिण्ड ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता राशी जैन, दौसा (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं द्वितीय सत्र में सौरभ कालेगोरे, केज (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। आभार प्रदर्शन उप–प्राचार्य पंडित जिनकुमार जी शास्त्री ने किया।

समस्त गोष्ठी का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष कक्षा (अपूर्व) एवं गोष्ठी के संयोजक स्वानुभव जैन खनियाँधाना, संयम जैन खनियाँधाना, सुष्मित जैन सेमारी, शाश्वत जैन भोपाल ने किया।

२. कोटा (राज.) : श्री कुंदकुंद कहान दिगंबर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा संचालित सिद्धम् पाठशाला के तत्त्वावधान में वीरशासन जयंती के उपलक्ष्य में दि. 23 जुलाई 2021 को विद्यार्थियों द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता डॉ. वीरसागरजी, दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेंद्रजी, कोटा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेंद्र जी, कोटा का समागम प्राप्त हुआ। साथ ही पं. बाबूभाईजी मेहता, पं. जे.पी.जी दोषी, पं. संजयजी शास्त्री जेवर, पं. धर्मेंद्रजी शास्त्री कोटा एवं मुमुक्षु आश्रम के सभी अध्यापकों की गौरवमयी उपस्थिति रही।

सभा का संचालन शौर्यका जैन, मुंबई एवं प्रसिद्धि जैन, दुबई ने किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण काव्य जैन, राजकोट तथा नृत्य मंगलाचरण नयांशी जैन एवं आरोही जैन, सिंगोली ने किया। संगोष्ठी के अंत में कृति जैन, सिंगोली ने आभार प्रदर्शन किया।

इसी शृंखला में 24 जुलाई को विद्यार्थियों के अभिभावकों के द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत जिनधर्म की प्रभावना में प्रसिद्ध सतियों के व्यक्तित्व को समझाया गया।

सभा की अध्यक्षता विदुषी कमलाजी भारिल्ल, जयपुर द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती बीनाजी पाटनी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती अल्काजी चाँदवाड़ का समागम प्राप्त हुआ। सभा का संचालन श्रीमती स्वातिजी जैन ने किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती नैना दीदी भोपाल तथा नृत्य मंगलाचरण अनुप्रेक्षा जैन एवं अगम्या जैन, बिजौलिया ने किया। अंत में आभार प्रदर्शन श्रीमती स्वातिजी कोलकाता ने किया।

दोनों कार्यक्रमों का संयोजन पं. नितेशजी कासलीवाल, पं. सचिनजी सागर एवं पं. निलयजी कोटा ने किया।

३. खंडवा / दिल्ली : जैनिजम थिंकर संस्थान दिलशाद गार्डन, दिल्ली एवं कुन्दकुन्द कहान भक्ति पाठशाला, खंडवा के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन, दिल्ली के सहयोग से वीरशासन जयंती के उपलक्ष्य में दि. 24 एवं 25 जुलाई 2021 को दिव्यध्वनिसार मंडल विधान एवं बाल संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रातःकाल पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, जिनेंद्र अभिषेक एवं दिव्यध्वनिसार विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का वीर शासन जयंती पर विशेष व्याख्यान तथा द्वितीय दिन पं. अशोकजी शास्त्री, राधौगढ़ का समयसार विषय पर व्याख्यान हुआ।

दोपहर कालीन सत्र में वीरशासन जयंती सभा का आयोजन किया गया, जिसमें अध्यक्ष पं. जे.पी.जी दोषी, मुख्य अतिथि श्री विजयजी बड़जात्या, विशिष्ट विद्वान पं. नितेशजी शास्त्री, पं. जिनेंद्रजी राठी एवं पं. जयकुमारजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ।

रात्रि कालीन सत्र में **ऐतिहासिक पर्व और वीरशासन जयंती** इस विषय पर बाल संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें अध्यक्ष पं. हेमचंदजी भोपाल, मुख्य अतिथि पं. अशोकजी लोहाडिया, विशिष्ट विद्वानों में डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, पं. सचिनजी शास्त्री, पं. सौरभजी शास्त्री एवं पं. संयमजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण दिव्या जैन एवं संचालन अनमोल जैन ने किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पं. जे.पी.जी दोशी, ब्र. मनोजजी, जबलपुर के निर्देशन एवं श्री नीरजजी, दिल्ली के संयोजन में संपन्न हुआ।

तत्त्वचिन्तन

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

क्रमनियमितपर्यायों का जबतक श्रद्धान नहीं होगा।
जबतक श्रद्धान नहीं होगा अर सम्यक् ज्ञान नहीं होगा।।
तबतक यह आतमराम कभी भी रे निर्भार नहीं होगा।
यदि निर्भार नहीं होगा तो भव से पार नहीं होगा।। १६ ।।

अरे शुद्ध उपयोग समाधि जीवन की सम्यक् विधि है।
और शुद्धपरिणति समाधिमय जीवन की अनुपम निधि है।।
ज्ञान–ध्यान–आचरण सभी कुछ सहजभाव से होता है।
यथायोग्य व्यवहार–आचरण[२] भी तो होता रहता है।। १७ ।।

सहज समाधी मय यह जीवन जीवनभर रह सकता है।
किन्तु मरण तो अन्त समय में समय मात्र को होता है।।
सत्–श्रद्धा के साथ समाधी रहे निरन्तर जीवनभर।
'अर समाधि के साथ मरण हो' रहे भावना जीवनभर।। १८ ।।

रहे प्रवाहित धार निरन्तर नित समाधिमय सरिता की।
अरे निराकुल जीवन में रे छाप न हो व्याकुलता की।।
दूर दूर तक दे न दिखाई परछाई आकुलता की।
भय चिन्ता की अर विकल्प की शंका की आशंका की।। १९।।

रे चाह नहीं, कुछ बात नहीं; माथे पर कोई भार नहीं।
सब अपने में ही सीमित हैं पर का कोई अधिकार नहीं।।
सारे संयोग निरर्थक हैं अर सभी बदलने वाले हैं।
उनसे कुछ भी संबंध नहीं वे यों ही जाने वाले हैं।। २०।।

अगले भव सब नक्की ही हैं उनके चुनने की बात नहीं।
एवं निदान है आर्त्तध्यान उसको करने की बात नहीं।।
निश्चित क्रम के अनुसार जहाँ भी जाना होगा, जाऊँगा।
'भव से होना है पार' बन्धुवर यही भावना भाऊँगा।। २१।।

लम्बे जीवन जल्दी मरने की भी है कोई चाह नहीं।
सहज भाव से जीने से अर मरने से इन्कार नहीं।।
सहजभाव से शान्तभाव से मरना–जीना है स्वीकृत।
जो कुछ जब जैसा होना है सब सहजभाव से अंगीकृत।। २२।।

अनुकूलों से अनुराग नहीं, अर बीती बातें याद नहीं।
अनाचार तो बहुत दूर अतिचारों की भी बात नहीं।।
जो कुछ जैसा होनेवाला उससे कोई इन्कार नहीं।
सब सहजभाव से है स्वीकृत है कोई अन्य प्रकार नहीं।। २३।।

जब केवलज्ञानी ने तेरे भावी के सब भव देखे हैं।
तब इसका अर्थ साफ ही है भावी भव भी सब निश्चित हैं।।
उनमें परिवर्तन करने की बातें सब व्यर्थ कल्पना है।
अर परिणामों के संभाल की बातें व्यर्थ जल्पना है।। २४ ।।

अरे जहाँ भी जाना है उसके अनुसार भाव होंगे।
उन भावों के अनुकूल समय पर कर्मों के बन्धन होंगे।।
उन कर्मों में उन भावों में ना कोई फेर–फार होगा।
कुछ भी करने का भार नहीं सब सहज भाव से ही होगा।। २५ ।।

उक्त तथ्य की सहज स्वीकृति ही समाधि है समता है।
कुछ भी करने की किसी तरह की ना कुछ भी आकुलता है।।
जिस साधक में यह समता है वह लौकिक कष्टों में भी हो।
तो भी वह अपने अन्तर में आनन्द में है आनन्द में है।। २६ ।।

रे समाधि तो सुखमय है उसमें कष्टों का काम नहीं।
अद्भुत समाधि है शान्त भाव उसमें अशान्ति का नाम नहीं।।
कष्टों की कारा दिखे हमें अन्तर की शान्ति नहीं दिखती।
हम बातें बड़ी बड़ी करते अन्तर की भ्रान्ति नहीं मिटती।। २७।।

अत्यन्त शान्त सुखमय जीवन की यह तो सहज अवस्था है।
न आकुलता न व्याकुलता यह इकदम सजग अवस्था है।।
यह तो समाधिमय जीवन है यह ही समाधिमय मरण अहा।
है यही ज्ञानियों का जीवन अर इसे समाधीमरण कहा।। २८।।

साधारण सी एक वस्तु जब खो जाती इस जीवन में।
हम आकुल–व्याकुल हो जाते कुड़ते रहते मन ही मन में।।
सभी वस्तुओं का वियोग जब एक साथ ही हो जाता।
अज्ञानमयी इस दुनियाँ में उसको ही मरण कहा जाता।। २९।।

जबतक अपना इन योगों से एकत्व नहीं विगलित होगा।
इनके वियोग में अरे हमारा चित्त सदा विचलित होगा।।
जबतक संयोगों से विरक्ति का भाव न होगा जीवन में।
इनसे लगाव न छूटेगा तो शान्ति न होगी जीवन में।। ३०।।

यदि समाधिमय जीवन है तो मरण समाधीमय होगा।
यदि जीवन है आकुलतामय तो मरण कहाँ सुखमय होगा।।
संयोगों से एकत्व तजो ममता छोड़ो संयोगों से।
कर्त्तापन–भोक्तापन तोड़ो अपनापन जोड़ो अपने से।। ३१।।

अपनापन जोड़ो अपने में अर अपने में ही जमो रमो।
अपने में स्वयं समा जावो अपनेमय ही तुम हो जावो।।
अपने में अपना सबकुछ है हम स्वयं स्वयं ही सबकुछ हैं।
रे समाधि का क्या करना जब स्वयं समाधिमय ही हैं।। ३२।।

(दोहा)

साधारण सी बात है, सब संयोग–वियोग।
अरे सहज स्वीकृत करो, यह संयोग–वियोग।। ३३।।
महिमा समताभाव की, जग में अपरंपार।
सम्यक् सुखमय शान्ति का, एकमात्र आधार।। ३४।।

–●–

वो स्वर्णिम पल कब आएगा

सोच विचारे बैठे हैं,
वो दिन कब आएगा।
खुद को खुद से मिलने का,
वो स्वर्णिम पल कब आएगा।।
परद्रव्यों में बहुत फिरा मन,
निज चेतन में कब आएगा।
निरन्तर निज में रमने का,
वो स्वर्णिम पल कब आएगा ।।
सच्चा सुख तो अपने में है,
पर से दुःख ही आएगा।
उपयोग निज में थिर होने का,
वो स्वर्णिम पल कब आएगा।।
इन विकल्पों की दौड़ में,
चेतन कैसे जीत के आयेगा।
खुद को खुद से मिलने का,
वो स्वर्णिम पल कब आएगा।।

– पुष्प जैन, आगरा

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

7

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 82– ज्ञायक भाव कैसा है?

उत्तर – ज्ञायक भाव अनादि अनंत नित्य उद्योतरूप स्पष्ट प्रकाशमान ज्योति है। वह प्रमत्त भी नहीं है, अप्रमत्त भी नहीं है; गुणस्थानातीत है, शुद्ध है और ज्ञाता है।

प्रश्न 83– ज्ञायक भाव अनादि अनंत कैसे है?

उत्तर – किसी से उत्पन्न न हुआ होने से और स्वयं अपने में ही सिद्ध होने से अनादि सत्तारूप है तथा कभी भी विनाशपने को प्राप्त न होने से अनंत है।

प्रश्न 84– ज्ञायक भाव नित्य उद्योतरूप स्पष्ट प्रकाशमान ज्योति कैसे है?

उत्तर – ज्ञायक भाव क्षण–क्षण में नाश को प्राप्त नहीं होता है, अत: नित्य उद्योतरूप है और ज्ञानियों के नित्य अनुभव में आता है, गुप्त नहीं है, प्रकट है; अत: स्पष्ट प्रकाशमान ज्योति है।

प्रश्न 85– ज्ञायक भाव प्रमत्त और अप्रमत्त क्यों नहीं है?

उत्तर – ज्ञायक भाव द्रव्य स्वभाव की अपेक्षा से शुभाशुभ भावों के स्वभावरूप परिणमित नहीं होने से प्रमत्त भी नहीं है और अप्रमत्त भी नहीं है।

प्रश्न 86– क्या हम कह सकते हैं कि ज्ञायक भाव अशुभ भाव रूप परिणमित नहीं होने से प्रमत्त नहीं है और शुभ भाव रूप परिणमित नहीं होने से अप्रमत्त नहीं है? यदि नहीं, तो सही क्या है और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – उक्त कथन सही नहीं है, सही कथन यह है कि शुभाशुभ भाव रूप परिणमित न होने से ज्ञायक भाव प्रमत्त भी नहीं है और अप्रमत्त भी नहीं है और उसके अभाव में होने वाले निर्मल भाव शुद्ध भाव अप्रमत्त भाव हैं। ज्ञायक भाव न तो मलिन भावरूप ही हैं और न पर्यायगत निर्मल भावरूप ही हैं, क्योंकि वह परिणमनरूप ही नहीं है, वह तो अपरिणामी तत्त्व है। **(क्रमश:)**

भूल की पुनरावृत्ति न होने देना ही भूल का सबसे बड़ा प्रायश्चित्त है। अतः भूत की भूलों को भूल जाओ, तत्त्वज्ञान के बल से वर्तमान में हो रहे भावों को संभालो, भविष्य स्वयं संभल जायेगा।

–अध्यात्म रतनाकर पं. रतनचंदजी भारिल्ल

मोक्षमार्गप्रकाशक 422 प्रवचनों में सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त युवा तार्किक विद्वान **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** के प्रतिदिन प्रात: **मोक्षमार्गप्रकाशक** ग्रंथ पर शब्दश: चले रहे मंगल प्रवचन सानन्द सम्पन्न हुये। ज्ञातव्य है कि 12 मार्च 2020 से प्रारंभ यह प्रवचन 12 जुलाई 2021 को पूर्ण हुये। 422 **प्रवचनों की इस शृंखला का देश-विदेश के हजारों साधर्मियों ने यूट्यूब के माध्यम से लाईव धर्मलाभ लिया।** उक्त सभी विडिओ प्रवचन **Dr. Sanjeev Godha** यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं। इसी चैनल पर जिनागम के अनेक विषयों पर उपलब्ध प्रवचनों का लाभ भी लिया जा सकता है।

साथ ही **प्रतिदिन प्रात:** 9:20 **(IST)** बजे से **समयसार (ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका)** एवं **रात्रि** में 8:00(**IST**) बजे से **संयमप्रकाश** ग्रंथ पर चल रहे प्रवचनों का लाभ **यूट्यूब चैनल** के माध्यम से लिया जा सकता है।

ज्ञातव्य है कि रात्रि में प्रतिदिन **टी.वी. के पारस चैनल** पर 10.00 बजे **धर्म का मर्म** (छहढाला) विषय पर व्याख्यानों का नियमित प्रसारण हो रहा है।

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित वीतराग-विज्ञान (मासिक) एवं जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) पत्रिकाओं की सॉफ्टकॉपी पी.डी.एफ. फॉर्मेट में **www.ptst.in** वेबसाइट पर प्राप्त की जा सकती है। इसके लिये वेबसाइट पर **Downloads** में वीतराग-विज्ञान या जैनपथप्रदर्शक खोलें, इसके पश्चात् **Search Box** में सन् डालने पर उस वर्ष के सभी अंक मिल जाएंगे। आप किसी भी फाइल को डाउनलोड कर सकते हैं।

(नोट - सन् 2002 के पश्चात् से अब तक सभी अंक उपलब्ध हैं।)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

महाविद्यालय की महिमा बताई। इसके बाद पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने वर्तमान में हो रहे अध्यात्म के अभूतपूर्व प्रचार-प्रसार की प्रशंसा की तथा उसमें महाविद्यालय के असीम योगदान को बताया।

श्री वसंतभाईजी दोषी ने महाविद्यालय की स्थापना समय के वरिष्ठ विद्वानों के योगदान को स्मरण करते हुए वर्तमान में प्रतिभावान विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या की प्रशंसा की।

इसी क्रम में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने विद्यार्थियों की निखरती हुई प्रतिभा के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त की तथा सदा महाविद्यालय के प्रति समर्पित रहने की भावना भायी।

श्री महिपालजी ज्ञायक, बाँसवाड़ा ने अपने वक्तव्य में शास्त्री महाविद्यालयों के उत्कृष्ट संचालन में दादा की रीति-नीति पर ही चलने की बात कही।

कार्यक्रम के अंत में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने मंगल उद्बोधन में महाविद्यालय की स्थापना से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण घटनाओं को बताते हुए विद्यार्थियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। समाज के श्रेष्ठी वर्ग से कहा कि प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही भविष्य में उत्कृष्ट साहित्यिक कार्य करेंगे। मूलग्रंथों की टीकायें लिखेंगे। अत: प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में ही कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने टोडरमल ट्रस्ट द्वारा दुगुने उत्साह से इसी कार्य को सुचारू रूप से चलाने की प्रबल भावना भी व्यक्त की।

इस प्रसंग पर शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थी अभिषेक जैन, देवराहा द्वारा एक सुन्दर कविता प्रस्तुत की गई।

इस प्रकार अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ महाविद्यालय का स्थापना दिवस कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2021

प्रति,